सोनी टेलीविजन चैनल ने 15नवंबर,2019 को अपने सबसे अधिक लोकप्रिय कार्यक्रम 'कौन बनेगा करोड़पति?''के हॉट शीट पर कीट–कीस के प्राणप्रतिष्ठाता प्रो. अच्युत सामंत को बिठाकर पूरी दुनिया के सामने उन्हें ''समर्पण के प्रतीक,मानवता की बेहतरीन मिसाल,कर्म ही जिसका धर्म है, सेवा ही जिसकी निष्ठा है,उनके जैसे कर्मवीर को सम्मानित करके 'केबीसी'स्वयं को सम्मानित महसूस किया,सच कहूं तो उसी वक्त से मैंने यह सोच लिया कि मैं भी अपनी लेखनी से अपने दिव्य पुरुष : डा अच्युत सामंत के विषय में अपनी अनुभूति लिखकर तथा उसे प्रकाशितकर अपने मानव–जीवन को सार्थक बना सकूं। लगभग छह सालों से मैं अपने दिव्य पुरुष डा अच्युत सामंत के सानिध्य में रह रहा हूं। उनको मैंने अत्यंत सरल और सहज स्वभाव का एक अलग व्यक्ति महसूस किया।उनका विदेह व्यक्तिगत जीवन मुझे प्रेरणादायक लगा।उनके द्वारा 1992–93 में मात्र पांच हजार रुपये में स्थापित ''कीस'' नामक शैक्षिक संस्थान आज विश्व का सबसे बड़ा आदिवासी आवासीय विद्यालय बन चुका है। ''कीस'' जिसे आजका वास्तविक तीर्थस्थल कहा जाता है। जहां पर आज लगभग तीस हजार से भी अधिक आदिवासी बच्चे समस्त आवासीय सुविधाओं का निःशुल्क उपभोग करते हुए केजी कक्षा से लेकर पीजी कक्षा तक पढ़ते हैं तथा डा अच्युत सामंत को अपना आदर्श मानकर अपने व्यक्तित्व का सम्यक विकास करते हैं। भारत सरकार के मानवसंसाधान विकास मंत्रालय ने कीस को भारत के प्रथम आदिवासी आवासीय विश्वविद्यालय के रुप में मान्यता प्रदान कर दी है और कीस विश्वविद्यालय विश्व का प्रथम आदिवासी आवासीय विश्वविद्यालय के रुप में जाना जाता है। बन चुका है।''कीस'' निःशुल्क शिक्षा के माध्यम से समाज के सबसे उपेक्षित तथा समाज के विकास से वंचित आदिवासी समुदाय के बच्चों के प्रति उनका आत्मीय लगाव समाजसेवा,लोकसेवा तथा आध्यात्मिक सेवा

मैंने अपने लंबे अध्ययन,ज्ञान और शिक्षण के अनुभव से जो कुछ भी प्राप्त किया अब वह मेरे व्यक्तिगत जीवन का सहज स्वभाव बन चुका है।मैंने

पहली बार 1994 में जब प्रो डॉ अच्युत सामंत जी से एक प्रेसवार्ता के क्रम में मिला तो मुझे उनका सरल और आत्मीय स्वभाव अच्छा लगा। उनके चेहरे की सहज मुसकराहट उनके अन्दर की असाधारण प्रतिभा को साफ–साफ स्पष्ट कर रही थी। उनके पारदर्शी और बिलकुल सरल ने मुझे उनके करीब आने की ओर आकृष्ट किया। उनके साथ मिलने का मेरा पहला इम्प्रेशन अनुकरणीय रहा। उनका सरल–सहज और मृदुल स्वभाव बहुत पसंद आया। उनका मुझ से हंस–हंसकर आत्मीय रुप में बातचीत करना और वह भी हिन्दी में ;मुझे बहुत पसंद आया। छात्र–जीवन में हिन्दी छात्र रहने के कारण मुझे हिन्दी कवियों की अलग–अलग विधिाओं पर आधारित कविताएं बहुत पसंद थीं जिन्हें आज भी मुझे कण्ठस्थ याद है। हिन्दी साहित्य जगत के समालोचक स्वर्गीय रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'श्रद्धा' की समालोचना में यह बताया है कि किसी प्रति श्रद्धा का आधार तीन प्रकार से होता है। पहली श्रद्धा सामनेवाले व्यक्ति की असाधारण प्रतिभा होती है। दूसरी श्रद्धा उस व्यक्ति का शील अथवा पारदर्शी चरित्र के रुप में होती है और तीसरे प्रकार की श्रद्धा सामनेवाले व्यक्ति की साधन संपन्नता होती है। सच कहूं तो इन तीनों प्रकार की श्रद्धा का समावेश मैंने प्रो डॉ अच्युत सामंत के व्यक्तित्व में पाया। इसीलिए जब मैं 31दिसंबर,2013 को केन्द्रीय विद्यालय नं.6,पोखरीपुट,भुवनेश्वर से जब मैं प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्त हुआ ठीक उसके दूसरे दिन पहली जनवरी ,2014 को उनसे मिला और यह बताया कि अब मैं सेवानिवृत्त हो चुका हूं। आपके सानिध्य में रहकर आपकी ही तरह आध्यात्मिक जीवन जीना चाहता हूं। अपने आपको आपकी तरह ही निःस्वार्थ समाजसेवा में लगाना चाहता हूं। प्रो डा अच्युत सामंत ने उस वक्त बताया कि जो भी मेरे साथ रहना चाहता है वह अपनी व्यक्तिगत अच्छाई के साथ रह सकता है। मैं किसी भी व्यक्ति को जो अच्छा होता है उसे अपनी ओर से कभी अलग नहीं करता। आपको मेरे साथ रहना अगर पसंद है तो आप अवश्य मेरे साथ रहिये लेकिन मुझे कुछ–कुछ हिन्दी बोलना सिखाइये। मुझे हिन्दी बोलने का तथा हिन्दी सिखने का बड़ा शौक है। मैंने उसी वक्त अपनी व्यक्तिगत

अनुभूति के आधार पर नामकरण कर दिया ''मेरे दिव्य पुरुष '' कीट–कीस के प्राण प्रतिष्ठाता प्रो अच्युत सामंत। आज भी मैं जब प्रतिदिन सुबह में 7.30 बजे मिलता मिलता हूं तो यही कहता हूं– ''जय जगन्नाथ!'' प्रातः स्मरणीय–वंदनीय दिव्य पुरुष की सदा जय हो! मुझे ऐसा लगता है कि भगवान जगन्नाथ ने प्रो डा अच्युत सामंत को मेरे कल्याणार्थ ही उनसे मुझे मिलाया। प्रो अच्युत सामंत की कुछ बातें मुझे अत्यंत दिव्य लगीं। पहली बात तो यह कि उनकी आत्मीयताभरी बातों में मुझे ऐसा लगा कि उनके व्यक्तित्व में कोई दिव्य आकर्षण है। दूसरी बात यह कि उनके चेहरे पर सदा मुसकराहट देखकर मुझे मुस्कराना आ गया। तीसरी बात उनकी निःस्वार्थ समाजसेवा की अपनी जिज्ञासा,उनका आत्मविश्वास तथा सत्यनिष्ठा। सबसे बड़ी बात हिन्दी बोलने की आकांक्षा।

के प्रति। उनके हिन्दी बोलने में कोई झिझक नहीं थी। चौथी बात उनका अविवाहित और निःस्वार्थ समाजसेवा हेतु त्यागमय जीवन अनुकरणीय और वंदनीय लगा। मैंने अपनी कुल 32साल की केन्द्रीय विद्यालय संगठन की सेवाओं से तथा एक हिन्दी बुद्धिजीवी होने के नाते यह महसूस किया कि कीट–कीस के प्राणप्रतिष्ठा प्रो अच्युत सामंत का पूरा जीवन आध्यात्मिक जीवन है। प्रतिदिन उनके द्वारा स्वयं तीन–तीन घण्टे पूजा–पाठ करना जबकि उनके निवासस्थल पर नियमित पूजक हैं जो घर में लगभग एक घण्टे पूजा–पाठ करते हैं। प्रो अच्युत सामंत से मिलनेवालों में साधु–महात्माओं की संख्या मुझे अधिक नजर आती है जो उनको आशीर्वाद देने के लिए भारत के विभिन्न मंदिरों,मठों तथा विदेशों से आते हैं ।स्वयं प्रो अच्युत सामंत का प्रतिमाह पहली तारीख को श्रीजगन्नाथ धाम पुरी जाकर भगवान जगन्नाथ के चरणों में अपना प्रणाम निवेदित करना,सिरुली हनुमान मंदिर में प्रतिमाह अंतिम शनिवार को जाकर पवनपुत्र हनुमानजी की पूजा करना,अपने गांव स्मार्ट विजेल कलराबंक जाकर प्रत्येक माह के शनिवार को अपने द्वारा निर्मित रामदरबार में पूजा करना तथा अपने भुवनेश्वर नयापली स्थित किराये के

मकान में प्रत्येक महीने की संक्रांति के दिन श्रीरामचरितमानस का सामूहिक संगीतमय सुंदरकाण्ड पाठ अनुष्ठित कराना मुझे बहुत अच्छा लगता है। मुझे ऐसा लगा कि प्रो अच्युत सामंत का सानिध्य मुझे दैव संयोग से मुझे प्राप्त हो गया है। इसीलिए आज अपना सबकुछ छोड़कर उनके साथ रहता हूं। उनके सरल,सौम्य और आत्मीय व्यक्तित्व में एक अलग तरह की दिव्यता का अहसास मैंने किया। जब भी उनके द्वारा स्थापित कीट–कीस प्रांगण में उनके बुलाने पर जाता हूं तो मुझे ऐसा लगाता है कि कीट –कीस का पूरा परिवेश आध्यात्मय हो जहां जाकर एक अलौकिक अनुभूति मुझे होती है। मैं उनकी तस्वीर को अपने मोबाइल में सदा रखता हूं जिससे प्रतिपल उनकी हंसती हुई तस्वीर देख सकूं और अपने आपको भी हंसमुख बना सकूं। पिछले लगभग 18सालों से प्रो अच्युत सामंत की तस्वीर मैं नियमित रखता हूं। प्रो अच्युत सामंत जब अपने समाजसेवा के कार्य के लिए ओडिशा से बाहर जाते हैं तो मैं सुबह ठीक 7.30 बजे उनको फोन करता हूं और जैसे ही वे फोन उठाते हैं उनको मैं यहीं आशीर्वाद करता हूं कि ''जय जगन्नाथ! जय जगन्नाथ!! जगन्नाथ!!! प्रातःस्मरणीय–वंदनीय दिव्य पुरुष की सदा जय हो!''उनका हसंता हुआ जवाब आता है कि 'पाण्डेयजी,प्रणाम,नमस्त! आप कैसे हैं?आपने जाय पीया या नहीं? मुझे ऐसा अहसास होता है जैसे मुझे दुनिया की तमाम खुशियां मिल गई हों। सच कहू तो प्रो अच्युत सामंत के विचार,व्यवहार और आचरण में एक अलौकिक दिव्यता है जिसका मैं कायल हूं। उनके साथ मुझे श्रीजगन्नाथपुरी के गोवर्द्धन मठ के 145वें पीठाधीश्वर और पुरी के जगतगुरु परमपाद स्वामी निश्चलानन्दजी सरस्वती महाराज के पावन दर्शन का भी सौभाग्य मिला है। मुझे ऐसा लगाता है कि एक तरफ जहां जगतगुरु शंकराचार्यजी स्वयं साक्षात चन्दमौलीश्वर के रुप में प्रो अच्युत सामंतजी को आशीष प्रदान कर रहे हैं वहीं प्रो अच्युत सामंत जी का जगतगुरु को षष्टांग प्रणाम निवेदन करना भी उनकी दिव्यता को स्पष्ट कर देता है। मैं जब भी प्रो अच्युत सामंत के पैतृक गांव कलाराबंक जाता हूं और प्रो अच्युत सामंत द्वारा उस गांव को स्मार्ट गांव के रुप में अवलनोकन करता हूं तो ऐसा लगता

—''सदा दिवाली संत घर''वाली बात प्रो अच्युत सामंत पर पूरी तरह से लागू है। उनके गुरु संत बाबा रामनारायण दास जी महाराज भी उनको दिव्यता का आशीष प्रदान करते हैं। प्रो अच्युत सामंत ने अबतक कुल लगभग 25 हिन्दू देवालयों का निर्माण अपनी ओर से कराया है जिसमें उनके गांव का रामदरबार,कीस वाणीक्षेत्र का जगन्नाथ मंदिर,पटिया के शिरीडी साईंबाबा मंदिर और सिरुली हनुमान मंदिर का जीर्णोद्धार मुख्य है। प्रो अच्युत सामंत को भगवान जगन्नाथ और पवनपुत्र हनुमान से खास लगाव है जबकि वे सभी धर्मों का आदर करते हैं तथा सभी देवी—देवताओं में विश्वास रखते हैं। सच कहूं तो प्रो अच्युत सामंत ईश्वरभक्त हैं,गुरुभक्त हैं,ब्राह्मणभक्त हैं तथा पूरी तरह से आध्यात्मिक जीवन यापन करते हुए समाज के सबसे उपेक्षित और वंचित आदिवासी समुदाय के अनाथ और बेसहारा बच्चों के वास्तविक रुप में भाग्यविधाता हैं। इसीलिए उनकी दिव्यता को मैं नमन करता हूं और उन्हें आलोक पुरुष तथा दिव्य पुरुष प्रो अच्युत सामंत के रुप में स्वीकार करता हूं। उनकी सकारात्मक सोच को मैं सदा अपने दिल से लगाये रखता हूं और अपनी भी सोच को उनके जैसा बनाने का भरपूर कोशिश करता हूं। उनके जीवन दर्शन : आर्ट आफ गिविंग' को अक्षरशः अपनाता हूं तथा उनके कीट—कीस के दिव्य प्रबंधन को विश्व की अनोखी पहल भी स्वीकार करता हूं । प्रो अच्युत सामंत की यह व्यक्तिगत सोच कि हमसब को दूसरों की अच्छाइयों को देखना चाहिए ;वह दिव्य विचार बहुत पसंद है। सच कहूं तो मैं कोई साहित्यकार अथवा विद्वान नहीं हूं। मैं कोई पत्रकार अथवा लेखक नहीं हूं । प्रो अच्युत सामंत का सानिध्य ही है जो मुझे सबकुछ बना दिया है। इसीलिए अंत में एकबार पुनः उच्चरित करना चाहूंगा कि —''प्रातः स्मरणीय —वंदनीय दिव्य पुरुष की सदा जय हो!''